■ राजस्थानी की मान्यता का भी उठा मुद्दा

युवा साहित्यकारों को लाएं आगे: आचार्य

सम्मेलन...
सालासर में शुरू हुआ दो दिवसीय युवा लेखक सम्मेलन

चर्चाएं...
पहले दिन कविता व कहानी लेखन पर हुई चर्चा

युवा साहित्यकार अनुराग हर्ष को सम्मानित करते राजस्थानी के वरिष्ठ साहित्यकार भंवर सिंह सामौर व भंवर लाल जांगिड़।

■ डीएनआर रिपोर्टर. सालासर/बीकानेर

राजस्थानी भाषा को मजबूत करने के लिए साहित्य अकादेमी कोई कसर नहीं छोड़ती। खासकर युवा प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए नवाचार हो रहे हैं, लेकिन अफसोस कि उस गति से राजस्थानी में पुस्तकें प्रकाशित नहीं हो रही। ये विचार साहित्य अकादमी की राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य 'आशावादी' ने यहां सालासर में अकादमी व मरुदेश संस्थान सुजानगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित युवा लेखक सम्मेलन में कहीं।

किताब पढ़ने की ललक होनी चाहिए

इस दौरान देश के विख्यात साहित्यकार अरविंद आशियां ने किताब पढ़ने की ललक जगाने की अपील की। यहां सावरथिया सेवा सदन में आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन के पहले दिन तीन सत्र में राजस्थानी भाषा के कविता व कहानी के हालात पर चिंतन किया गया।

भाषा को आगे ले जाना जरूरी

अपने सम्बोधन में आचार्य ने कहा कि भाषा को आगे ले जाने का काम युवा करेंगे। उन्हें अवसर देने की जरूरत है। इसी कारण अकादमी युवाओं को मंच दे रही है।

नई पीढ़ी सामने आएं

इस सम्मेलन में भी प्रदेशभर से युवा रचनाकारों को मंच दिया जा रहा है। वरिष्ठ साहित्यकार सामने बैठकर नई पीढ़ी को देखेंगे। उन्हें तराशेंगे।

साहित्य के क्षेत्र की कई हस्तियां रही उपस्थित

कार्यक्रम में साहित्य क्षेत्र की कई हस्तियां उपस्थित रही। जिनमें ओम प्रकाश तंवर चूरू, राजेश विद्रोही लाडनूं, किशोर सैन, सुमनेश शर्मा, कमल नयन तोषनीवाल, दिनेश स्वामी, आरके कौशिक, सूर्यप्रकाश सिंह मवतवाल, आनन्दी लाल गोठडिया, लालचंद बेदी, इल्यास खान, राम सिंह रैगर, जीतमल टाक, पार्थ सोनी शामिल है।

किताबों में जीवन

इस मौके पर साहित्यकार अरविंद आशियां ने कहा कि किताब ही पीढ़ियों को आगे लेकर चल रही है। उन्होंने कहा कि अधिकांश धर्म भी किताब को ग्रन्थ के रूप में स्वीकार कर मानवता को आगे लेकर जा रहे हैं। गुरुग्रंथ साहिब हो या कुरान, रामायण या महाभारत पढ़कर ही सब मानवता सीख रहे हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि जब तक लोग ज्ञान का अंतिम लक्ष्य नौकरी समझेंगे तब तक समाज का सुधार नहीं हो सकता। ज्ञान का लक्ष्य तो समाज है।

हरिशंकर आचार्य की पुस्तक लोकार्पित

इस मौके पर स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक जनसम्पर्क व साहित्यकार हरिशंकर आचार्य की पुस्तक 'पेटूराम रो पेट' का लोकार्पण साहित्यकार मधु आचार्य 'आशावादी', अरविंद आशियां व भंवर सिंह सामौर ने किया।

पीढ़ियों का अंतर मिटाना होगा

सोमवार के अंतिम सत्र में साहित्यकार व पत्रकार अनुराग हर्ष ने कहा कि जब तक बच्चों को साहित्य से नहीं जोड़ेंगे तब तक हम पीढ़ियों के अंतर को मिटा नहीं सकते। इस मौके पर विनीता शर्मा ने रिश्तों पर आधारित कहानी का वाचन किया। वहीं सुधा सारस्वत ने भी परिवार पर आधारित कहानी सुनाई। कवियत्री निशा आर्य ने मुक्त क व कविता के साथ जोरदार व्यंग्य कर समाज के हालात बताए।

कवियों ने चलाये तीर कमान

दूसरे सत्र में तीन कवियों ने अपनी रचनाओं से समाज की व्यवस्थाओं पर तीर चलाये। बीकानेर से आये कवि रोशन बाफना ने अपनी पुस्तक 'इती सी तो बात है' से कुछ कविताओं का वाचन किया। कवयित्री परवीना भाटी ने शिक्षण व्यवस्था पर सवाल उठाती अपनी कविता का पाठ किया। बीकानेर के पुनीत रंगा ने बेटियों को अनमोल बताते हुए मानवता की खोज को शब्दों से रेखांकित किया। रंगा ने अपनी 5 कविताएं सुनाई।

साहित्य अकादमी का प्रयास

साहित्य अकादमी के सहायक सम्पादक ज्योतिकृष्ण वर्मा ने कहा कि लेखन आपकी भावनाओं को आगे ले जाने का काम करता है। उन्होंने कविता पाठ के साथ बताया कि हमें लेखन जारी रखना चाहिए। वरिष्ठ साहित्यकार भंवर सिंह सामौर ने अपने वृहद राजस्थानी ज्ञान से उपस्थित संभागियों को उपकृत किया। उन्होंने बताया कि हम भाषा में शब्द व भाव का मिश्रण करते हैं। उन्होंने राजस्थानी के वृहद शब्द कोष का जिक्र करते हुए कहा कि किस तरह बरसात के दर्जनों शब्द राजस्थानी में है व हर महीने के हिसाब से राजस्थानी में बारिश का अलग शब्द है। उन्होंने युवा पीढ़ी से कहा कि आप पढ़ो, तभी शब्द का महत्व समझ सकेंगे। वैद्य श्रीराम कौशिक ने आयुर्वेद में राजस्थानी की बात कही। कार्य म का संचालन करते हुए मरु देश संस्था के अध्यक्ष घनश्याम नाथ कच्छावा ने कहा कि कन्हैयालाल सेठिया के जन्म शताब्दी वर्ष को ये कार्यक्रम समर्पित किया गया है।

दैनिक भास्कर

15-Oct-2019
बीकानेर Page 11

साहित्य • सालासर में दो दिवसीय युवा लेखक सम्मेलन शुरू, पहले दिन कविता व कहानी लेखन पर हुई चर्चा

किताब ही पीढ़ियों को आगे लेकर चल रही है : अरविंद आशियां

भास्कर न्यूज | सालासर (चूरू)

राजस्थानी भाषा को मजबूत करने के लिए साहित्य अकादेमी कोई कसर नहीं छोड़ती। खासकर युवा प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए नवाचार हो रहे हैं, लेकिन अफसोस है कि उस गति से राजस्थानी में पुस्तकें प्रकाशित नहीं हो रही। ये विचार साहित्य अकादेमी की राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य 'आशावादी' ने सालासर में अकादमी व मरुदेश संस्थान सुजानगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित युवा लेखक सम्मेलन में कही। इस दौरान देश के साहित्यकार अरविंद आशियां ने किताब पढ़ने की ललक जगाने की अपील की। सावरथिया सेवा सदन में हुए दो दिवसीय सम्मेलन के पहले दिन तीन सत्र में राजस्थानी भाषा के कविता व कहानी के हालात पर चिंतन किया गया। अपने संबोधन में आचार्य ने कहा कि भाषा को आगे ले जाने का काम युवा करेंगे, उन्हें अवसर देने की जरूरत है। इसी कारण अकादेमी युवाओं को मंच दे रही है। इस सम्मेलन में भी प्रदेशभर से युवा रचनाकारों को मंच दिया जा रहा है। वरिष्ठ साहित्यकार सामने बैठकर नई पीढ़ी को देखेंगे। उन्हें तराशेंगे। साहित्यकार अरविंद आशियां ने कहा कि किताब ही पीढ़ियों को आगे लेकर चल रही है। उन्होंने कहा कि अधिकांश धर्म भी किताब को ग्रंथ के रूप में स्वीकार कर मानवता को आगे लेकर जा रहे हैं। गुरुग्रंथ साहिब हो या कुरान, रामायण या महाभारत पढ़कर ही सब मानवता सीख रहे हैं।

भावनाओं को आगे ले जाने का काम करता है लेखन : वर्मा

साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक ज्योतिकृष्ण वर्मा ने कहा कि लेखन आपकी भावनाओं को आगे ले जाने का काम करता है। उन्होंने कविता पाठ के साथ बताया कि हमें लेखन जारी रखना चाहिए। भंवर सिंह सामौर ने बताया कि हम भाषा में शब्द व भाव का मिश्रण करते हैं। उन्होंने राजस्थानी के वृहद शब्द कोष का जिक्र किया। वैद्य श्रीराम कौशिक व डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने भी विचार रखें।

दूसरे सत्र में कवियों ने चलाए तीर

दूसरे सत्र में कवियों ने अपनी रचनाओं से समाज की व्यवस्थाओं पर तीर चलाए। इस मौके पर रोशन बाफना, परवीना भाटी, पुनीत रंगा ने कविता पाठ किया। सोमवार के अंतिम सत्र में साहित्यकार अनुराग हर्ष ने कहा कि जब तक बच्चों को साहित्य से नहीं जोड़ेंगे तब तक हम पीढ़ियों के अंतर को मिटा नहीं सकते। इस मौके पर विनीता शर्मा ने रिश्तों पर आधारित कहानी का वाचन किया। वहीं सुधा सारस्वत ने भी परिवार पर आधारित कहानी सुनाई। कवयित्री निशा आर्य ने समाज के हालात बताए। कार्यक्रम में सालासर के रविशंकर पुजारी, कैलाश पोद्दार, जीवन कुमावत, ओमप्रकाश तंवर (चूरू), राजेश विद्रोही (लाडनूं), किशोर सैन, सुमनेश शर्मा, कमल नयन तोषनीवाल, दिनेश स्वामी, आरके कौशिक, सूर्यप्रकाश सिंह मवतवाल, आनन्दी लाल गोठडिया, लालचंद बेदी आदि शामिल रहे।

युवा कवि हरि शंकर की पुस्तक 'पेटूराम रो पेट' का विमोचन

सालासर | राजस्थानी में बाल साहित्य सृजन आज की आवश्यकता है। इस दिशा में सतत लेखन होना चाहिए। सोमवार को सालासर में राजस्थानी के युवा कवि हरि शंकर आचार्य की बाल कविताओं की पुस्तक 'पेटूराम रो पेट' के विमोचन दौरान अतिथियों ने यह बात कही। साहित्यकार भंवरसिंह सामौर ने कहा कि बच्चों को जीवन मूल्यों से रूबरू करवा सके, ऐसी क्षमता इसमें होनी चाहिए।

मधु आचार्य 'आशावादी' ने कहा कि आचार्य की कविताएं लयबद्ध होने के साथ, अर्थपूर्ण हैं। अरविंद आशिया ने कहा कि युवाओं का बाल साहित्य सृजन की ओर अग्रसर होना, भाषा और साहित्य के लिए सुखद संयोग है। घनश्याम नाथ कच्छावा ने पुस्तक के बारे में बताया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोग शामिल थे।

युवा कवि हरि शंकर आचार्य की पुस्तक का सालासर में हुआ विमोचन

चूरू, 14 अक्टूबर। राजस्थानी में बाल साहित्य सृजन आज की आवश्यकता है। इस दिशा में सतत लेखन होना चाहिए। आचार्य की नई पुस्तक इस दिशा में मजबूत कड़ी साबित होगी। सोमवार को जिले के सालासर के सावरथिया सेवा सदन में राजस्थानी के युवा कवि जनसम्पर्क अधिकारी हरि शंकर आचार्य की बाल कविताओं की पुस्तक %पेटूराम रो पेट% के विमोचन दौरान अतिथियों ने यह बात कही। राजस्थानी के वरिष्ठ साहित्यकार भँवरसिंह सामौर ने कहा कि राजस्थानी बाल साहित्य, सन्देश परक हो। बच्चों को जीवन मूल्यों से रू.ब.रू करवा सके, ऐसी क्षमता इसमें होनी चाहिए। केंद्रीय साहित्य अकादमी में राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य %आशावादी% ने कहा कि आचार्य की कविताएं लयबद्ध होने के साथए अर्थपूर्ण हैं। यह सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं लिखी गई हैं, बल्कि प्रत्येक कविता कुछ ना कुछ सिखाती है। उदयपुर के वरिष्ठ साहित्यकार अरविंद आशिया ने कहा कि युवाओं का बाल साहित्य सृजन की ओर अग्रसर होना, भाषा और साहित्य के लिए सुखद संयोग है। मरुदेश संस्थान के घनश्याम नाथ कच्छावा ने पुस्तक के बारे में बताया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार अनुराग हर्ष, युवा कवि पुनीत रंगा, कमल किशोर पीपलवा, गौरी शंकर निमिवाल, विनीता शर्मा सहित अन्य युवा साहित्यकार मौजूद रहे।